Vol 4 Issue 12 Jan 2015

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary
Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Impact Factor : 3.1560(UIF)
Volume-4 | Issue-12 | Jan-2015
Available online at www.isrj.org

सांस्कृतिक चेतना के स्रोत : मिथक

वीरेन्द्र भारद्वाज

एसोसिएट प्रोफेसर , शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय.

सारांश **:**-हिन्दी साहित्य में 'मिथक' शब्द अंग्रेजी के (Myth) में इक् प्रत्यय लगाकर बनाया गया है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'मिथक' शब्द का प्रयोग किया हैं। 'मिथ' (Myth) यूनानी शब्द Mythos से निकला जिसका अर्थ होता था – मुख से उच्चरित वाणी।' प्रारंभिक दौर में कथाएँ प्रायः मुख से उच्चरित की जाती थीं इसीलिए सभी प्रकार की कविताओं के लिए मिथक शब्द का प्रयोग होने लगा। अरस्तू ने मिथक से तात्पर्य–कथा–विधान, कथानक, कथाबंध या गल्पकथा से लिया है। इस प्रकार पाश्चात्य समीक्षकों ने 'मिथ' से तात्पर्य – मिथ्या, गल्प, कपोलकथा, काल्पनिक कथा से जोड़ा है।

प्रस्तावना :

भारतीय परम्परा में संस्कृत साहित्य में भी 'मिथ' का नज़दीकी सम्बन्ध 'मिथ्या' से जोड़ा जाता है। कदाचित शब्द साम्य के प्रभाव से भारतीय परम्परा में भी समीक्षकों ने मिथक के निकटवर्ती शब्दों में – पुरावृत्त, पुराणकथा, कल्पकथा, धर्मकथा आदि को खोज निकाला है। उल्लेखनीय है कि मिथक शब्द अधिक व्यापक अर्थ को समेटे है और उपरोक्त अन्य शब्द 'मिथक' की किसी खास विशेषता की ओर संकेत करते हैं। 'मिथक' कपोल कथा मात्र नहीं है, वह उससे बहुत अधिक व्यापक विस्तार को ग्रहण करता है। इस रूप में कहा जा सकता है कि अंग्रेजी शब्द 'मिथ' से ध्वनि साम्य और अर्थ साम्य – दोनों ही दृष्टिकोण से हिन्दी में भी 'मिथक' शब्द ही अधिक प्रचलित हुआ। मिथक अपनी मूल धारणा में आदिम मानव के सामूहिक मन की सृष्टि है। इसके निर्माण में चेतन की अपेक्षा अचेतन प्रक्रिया की अधिक भूमिका रहती है। मानव मन की यह सृष्टि विभिन्न कथाओं के रूप में उभरती है। इस स्तर पर जन्म–मरण, वायु–वर्षा, धर्म–दर्शन, लोक विश्वास–कर्मकांड आदि से संबंधित अनेक धारणाएँ–घटनाएँ लौकिक और सामाजिक परम्पराओं को जन्म देती हैं। इन कथाओं में प्रारंभिक रूप में कथा तत्त्व महत्त्वपूर्ण होता है जो कालांतर में प्रतीकार्थ प्रधान रूप में प्रतिष्ठित होता जाता है।

इस प्रकार मिथक से अभिप्राय ऐसी घटनापूर्ण कथावृत्त से है जिसका निर्माण समय की स्लेट पर निर्मित होता चलता है। यह अति प्राकृतिक, अलौकिक, प्राक्ऐतिहासिक भावों एवं कल्पनाओं द्वारा संचालित होता है। इनका निर्माता कोई एक व्यक्ति विशेष न होकर सामूहिक मन होता है। इनमें उपजीव्य होने की अद्भुत शक्ति होती है। मिथक कथाएँ प्रायः धर्म और मूल्यों की सर्जक सिद्ध होती हैं।

मिथक के उद्भव और विकास को लेकर ज्ञान–विज्ञान के अनेक अनुशासन विचार कर रहे हैं। पाश्चात्य समीक्षकों ने मिथक के प्रारंभिक सर्जक के रूप में आदिम मानव का उल्लेख किया है। आदिम मानव ने जब अपनी चेतन अवस्था में पहले–पहल प्रकृति से साक्षात्कार किया, तो उसके ह्रदय में विराट प्राकृतिक–व्यापार को लेकर अनेक प्रकार के भय, जिज्ञासा, कौतुहल, आश्चर्य, हर्ष आदि विभिन्न भावों ने जन्म लिया। सूर्य क्या है? चन्द्रमा क्या है? वर्षा क्यों होती है, रात और दिन कैसे बदलते हैं? वर्षा से पेड़–पौधे कैसे और क्यों जन्म लेते हैं? जैसे अनेक प्रश्न–जिज्ञासाएँ आदिम मानव के सामूहिक मन में उमड़ने लगीं। इन घटनाओं और परिस्थितियों को आदिम मानव ने जितना समझा, जैसे समझा – उसको अपनी कथाओं में ढाल दिया। यहीं से दैवी शक्ति की कल्पना, मानव की मंगल कामना जैसी आदिम धारणाएं प्रकाश में आयी। लेबिस स्पेंस के शब्दों में मिथक – 'आदिम मानव का विज्ञान' था। इस रूप में कहा जा सकता है कि मिथक से जुड़े आख्यान मनुष्य की कोरी कल्पना मात्र नहीं हैं बल्कि वे आदिम मानव के मन का अनुभूत सत्य हैं। जहाँ पर समस्त प्रकृति जीवित तत्त्व के रूप में क्रियाशील है। हिन्दू समाज की अनेक कथाएँ, मान्यताएँ, अलौकिक शक्तियों की गाथाएँ आज भी इस मिथकीय भंडार का हिस्सा है इनमें मानव जीवन को नित्य–नूतन उर्जा, विश्वास प्रदान करने की अद्भुत शक्ति है। नृतत्त्वशास्त्री लेवी स्ट्रास, दुर्खीम से लेकर श्याम सिंह 'शशि' तक ने मिथक को एक विकासात्मक तत्त्व के रूप में देखा है। यहाँ उल्लेखनीय है कि मिथक विभिन्न संस्कृतियों की विकास की गाथा भी अपने में समेटे हुए है। लेवी स्ट्रास के अनुसार ''किसी जाति के जीवन, उसकी सामाजिक व्यवस्था, धार्मिक धारणाओं और आचरण आदि

का निर्धारण मिथक के आधार पर बहुत हद तक संभव है।''

स्पष्ट है कि नृतत्त्वशास्त्रियों ने मिथक को आदिम मानव की खोज के रूप में देखा है। आदिम मानव की चेतना का विस्तार और उसका पुनर्सृजन मिथक को धर्मशास्त्र और आख्यानात्मकता से जोड़ता है। समाजशास्त्रीय चिंतन को आदिम जातियों और जनजातियों के सामाजिक विकास के नज़रिए से देखता है। इस स्तर पर आदिम जातियों के सामाजिक परिवेश के निर्माण में सम्पूर्ण प्रकृति का योगदान उद्घाटित होता है। समाजशास्त्रीय चिंतक मिथक सृजन की प्रक्रिया में 'टोटेमवाद' का भी विश्लेषण करता है। जहाँ पर सामूहिक–सहयोग, सहअस्तित्व की पहचान एक विशिष्ट समूह की पहचान के रूप में उभरती है। आदिम मानव को आभास होता है कि प्राकृतिक घटनाओं के घात–प्रतिघात अथवा संवेदनाओं से सामूहिक रूप से अधिक प्रभावशाली ढंग से निपटा जा सकता है। समूह की पहचान की अवधारणा 'टोटम' और 'टैबू' के रूप में विकसित होती है और अनेक विशिष्ट दंत कथाओं को जन्म देती है। इस प्रकार मिथकों का अध्ययन सामाजिक संरचनाओं को समझने में भी खासा सहायक होता है।

मनोविश्लेषणवाद को आधुनिक युग के सर्वाधिक सूक्ष्म विचार–दर्शन के रूप में जाना जाता है। सिग्मंड फ्रायड (1856–1939) ने सर्वप्रथम मनोविश्लेषण के अन्तर्गत स्वप्न और मिथक का अन्तर्सम्बंध स्पष्ट करने का प्रयास किया। डॉ. नगेन्द्र इसे अधिक स्पष्ट करते हैं कि जिस प्रकार स्वप्न में वैयक्तिक वर्जनाओं की अभिव्यक्ति प्रतीकात्मक रूप में होती है उसी प्रकार सम्पूर्ण मानव जाति की कुंठाओं की अभिव्यक्ति मिथकों के माध्यम से होती है।' फ्रायड के शिष्य युंग (1875–1961) ने फ्रायड की एक पक्षीय विचारधारा से असहमति जताते हुए मन के तीन स्तर चेतन, अचेतन और सामूहिक अवचेतन किए और मिथक को 'दमित काम भावनाओं की अभिव्यक्ति' की अपेक्षा 'सामूहिक अवचेतन की आकांक्षाओं और भावनाओं की आदिम अभिव्यक्ति' बताया। मिथक सृजन में आद्यबिंब (आर्कटाइप) की भूमिका का विशेष उल्लेख किया। ये आद्य बिंब सामाजिक संवेदनाओं से संचित मानव चेतना से संचालित होते हैं और सामूहिक अवचेतन में विद्यमान रहते हैं। साहित्य में इन बिंबों की उपस्थिति उस जाति के मनोविज्ञान के विकास की घटनाओं के रूप में सुरक्षित रहती है। डॉ. रमेश कुंतल मेघ के अनुसार मिथक और धर्म का संबंध संश्लिष्ट है। यह तय कर पाना भी नामुमकिन है कि कब मिथक की समाप्ति और धर्म की शुरूआत होती है।

मिथक और धर्मशास्त्र का भी गहरा रिश्ता है। अनेक मिथक कथाएँ कालांतर में धर्म का स्वरूप ग्रहण कर लेती है। और अनेक धार्मिक क्रियाकलाप–अनुष्ठान आदि मिथक में नयी चेतना का संचार करते हैं। ये एक–दूसरे को समृद्ध भी करते हैं और विकसित भी। इस रूप में मिथक का विकसनशील चरित्र भी सामने आता है। भाषा–शास्त्र में भी मिथक के स्वरूप–विवेचन पर अपना विशिष्ट पक्ष रखा गया है। मैक्समूलर का विचार है कि कतिपय कवित्वपूर्ण संज्ञाएँ भाषा की विकृति अथवा बीमारी की वज़ह से कई बार ऐसे विराट–दिव्य रूप ग्रहण कर लेती है जिनकी कल्पना उनके सर्जकों ने भी नहीं की होती। यही धारणाएँ–कथाएँ मिथक रूप में प्रतिष्ठित हो जाती हैं। वस्तुतः भाषा के दृष्टिकोण से मिथक का अध्ययन और उसका अर्थ उद्घाटन नित्य–नूतन रूप लेता जाता है। प्रत्येक शब्द की मूल पृष्ठभूमि और अर्थ संरचना में कोई न कोई मिथकीय तत्व सक्रिय रहता है। 'सुनील पक्का हरिश्चन्द्र है' – के अर्थ का उद्घाटन विशिष्ट मिथकीय चेतना के सहारे ही संभव हो पाता है। इसमें राष्ट्र की संस्कृति–परम्परा और इतिहास का विशेष योगदान रहता है इसलिए मिथक को भाषा की बीमारी की अपेक्षा भाषा की जीवंत शक्ति के रूप में देखा जाना चाहिए। इतिहास संबंधी धारणाओं ने भी मिथक निर्माण में विशेष योगदान दिया है। अतीत में घटी घटनाएँ मिथकीय चेतना से सम्पृक्त होकर लोक चेतना में बस जाती है। इनमें जातीय चेतना की वाहक अनेक कथाएँ सम्मिलित रही हैं इसलिए मिथक लोक जीवन में इतिहास से भी अधिक आत्मीय होते हैं। इस रूप में मिथक किसी भी जाति के इतिहास के साथ–साथ उसकी संस्कृति के अन्तःकरण के रूप में दिखायी देते हैं। राम, शिव, मनु, हरिश्चन्द्र, युधिष्ठिर, सावित्री आदि पात्र अपनी ऐतिहासिकता से अधिक मिथकीय चेतना से सम्पृक्त होकर भारतीय संस्कृति को समृद्ध करते हैं। अनेक विद्वान इसे इतिहास के मिथक बनते जाने की घटना से जोड़ते हैं। जहाँ पर समय और पात्र की अपेक्षा घटनाओं का लोकजीवन में रच–बस जाना अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है। कई बार तो मिथक की यह शक्ति इतिहास को चुनौती भी देती दिखाई पड़ती है। यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि प्रत्येक ऐतिहासिक घटना मिथक नहीं बन सकती, बल्कि जातीय चेतना में गुँथी सामूहिक संवेदना ही मिथक के रूप में विकसित हो जाती है।

मिथक और साहित्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है। पाश्चात्य विद्वान रिचर्ड चे ने तो 'मिथक ही साहित्य है' कहकर थोड़ी अतिरंजना कर दी किन्तु यह सत्य है कि प्रतीयमान सत्य के वाहक मिथक और साहित्य में कथावस्तु, बिम्ब, प्रतीक, भाषा, अलंकार आदि के स्तर पर एकरूपता दिखायी पड़ती है। मिथक में सामूहिक चेतना की अभिव्यक्ति होती है जबकि साहित्य में वैयक्तिक चेतन भी कई बार अधिक प्रबल हो जाता है। यह बात और है कि वही साहित्य कालजयी स्वरूप ग्रहण कर पाता है जिसमें जातीय चेतना में रच–बस जाने की शक्ति होती है। साहित्य मिथकों का भण्डार है और साहित्य में मिथक की पुनर्सर्जनात्मक शक्ति का सबसे अधिक उपयोग होता है। रामायण, रामचरित मानस, प्रियप्रवास, कामायनी, एक कंठ विषपायी, अंधायुग, अग्निसागर जैसी रचनाएँ इसके सशक्त उदाहरण हैं।

लोकगाथा और लोकविश्वास ने भी मिथक निर्माण में सहयोग किया है। लोक–कथाओं की उत्पत्ति भी प्राचीन काल से ही प्रारंभ हो गयी थी। बहुत संभव है कि काल के संघर्ष में अपने मूल आशय से भटककर अनेक मिथक आज लोकगाथा या लोक कथाओं के रूप में मौजूद हों। दूसरी ओर जातीय और सांस्कृतिक मूल्यों को वहन करने की क्षमता वाली लोककथा मिथक की ओर भी बढ़ जाती है। इस स्तर पर लोक विश्वास की समाज में तर्क और बुद्धि से परे की आस्थावादी अवधारणा भी मिथक की शक्ति को समृद्ध करती है। निजंधरी कथाएँ, परी कथाएँ, व्रत कथाएँ, ज्योतिष किंवदंतियाँ – अपशकुन संबंधी विश्वास भी मिथक निर्माण में सहयोगी होते हैं।

प्रतीक और मिथक का भी गहरा संबंध है। प्रतीकात्मकता मिथक की शक्ति को उद्घाटित करने वाली कुंजी है। प्रायः प्रतीक के माध्यम से ही हम मिथक की आभ्यंतरिक अर्थ संरचना को समझते हैं। प्रतीकों के सहारे ही मिथक गल्पकथा अथवा लोककथा से भिन्न स्वरूप ग्रहण करते जाते हैं। प्रतीक ही मिथक को युग सापेक्ष संस्कार देते हुए पुनर्सृजित करने में सहायक होते

हैं।

भारतीय चिंतन परम्परा में भी अंग्रेजी के 'मिथ' जैसी धारणा – पुनराख्यान, पुनरावृत्त, धर्मगाथा, लोकगाथा, लोकाख्यान, प्रख्यात नायक, इतिहास प्रसिद्ध नायक, देवकथा आदि के संदर्भ में उपलब्ध होती है। पुराणपंचलक्षणों (सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश मन्वंतर, वंशानुचरित) मिथक सृजन की चेतना से सराबोर है। पुराण शब्द से तात्पर्य उस सम्पूर्ण वाङ्मय से है जो वेद, उपनिषद, दर्शन, स्मृतियों आदि के गूढ़ तथ्यों को अनेक दृष्टांतों, रूपकों, आख्यानों एवं उपाख्यानों के माध्यम से जनसाधारण के लिए सहज–सरल रूप में बोधगम्य बनाता है। स्पष्ट है कि मिथकों में जगत तथा उसके पदार्थों की उत्पत्ति जल प्रलय संबंधी आख्यान, राजाओं–ऋषि मुनियों की परम्परा, मन्वंतर और श्रेष्ठ मनुष्यों के चरित्र–वर्णन, देवताओं के प्रणय व्यापार संबंधी कथाओं का भरपूर उल्लेख हुआ है। प्रकृति–पुरुष, शिव–शक्ति, लक्ष्मी–विष्णु जैसी अनेक युग्म संबंधी कथाएँ मिथकों में संग्रहित हैं।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि जातीय चेतना की कथ्यपरक अवधारणाएँ मिथक हैं। इनमें सामूहिक चेतना और लोक–स्वीकृति का विशेष योगदान रहता है। मिथक का प्रभाव क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। लोककला, ललित कला, चित्रकला आदि प्रायः सभी कलाओं की अन्तर्भूत चेतना अनेक बार मिथक के माध्यम से ही उद्घाटित होती है। आधुनिक युग में मिथक के माध्यम से मानव–परम्पराओं की समझ और उनकी पुनर्व्याख्या आज की आलोचना की प्रमुख शैली है। अनेक साहित्यिक रचनाओं की परख मिथकीय चेतना के बल पर की गयी है। मिथक को गल्पकथा, कपोल कथा कहने के बाजवूद यह स्वीकार करना पड़ेगा कि उनमें आदिम मानव के अनुभूत मन का सत्य विद्यमान है इसीलिए मिथक लोक–जीवन और परम्परा में इतिहास से अधिक आत्मीय होते हैं। मनुष्य जाति अपने सम्मुख उठ खड़ी हुई विभिन्न सांस्कृतिक–सामाजिक चुनौतियों के समाधान बहुआयामी अर्थचेतना से सम्पृक्त मिथकों की रोशनी में ही करती आयी है। मिथकों की युग–सापेक्ष पुनर्सृजनात्मक शक्ति नित्य–नूतन साहित्यिक रचनाओं के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाती हैं। हिन्दी साहित्य में रामचरित मानस, सूरसागर, प्रियप्रवास, कामायनी, राम की शक्तिपूजा, संशय की एक रात आदि का मिथकीय रचनाओं के रूप में उल्लेख किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1.मिथक और साहित्य – डॉ. नगेन्द्र
2.मिथक और स्वप्न – प्रो. रमेश कुन्तल मेघ
3.हिन्दी नाटक – ब्रह्मवैवर्त पुराण
4.मिथक और यथार्थ – प्रो. रमेश गौतम
5.मिथक एक अनुशीलन – मालती सिंह
6.तुलसी आधुनिक वातायन से – प्रो. रमेश कुन्तल मेघ
7.Structural Anthropology - Clude Strauss
8.Introduction to Mythology - Lavis Space.

1.मिथक और साहित्य – डॉ. नगेन्द्र, पृ. 6.
2.दृष्टव्य – डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'मिथक' शब्द का ही प्रयोग किया है।
3.मिथक और साहिय – डॉ. नगेन्द्र, पृ. 4.
4.इन्ट्रोडक्शन टु माइथोलोजी : लेविस स्पेंस, पृ. 21.
5.लेजी स्ट्रास – दुर्खीम, श्याम सिंह शशि।
6.द्रष्टव्य : Structural Anthropology : Claude Strauss, p. 206-31.
7.द्रष्टव्य : मिथक और साहित्य, डॉ. नगेन्द्र, पृ. 12.
8.वही।
9.तुलसी आधुनिक वातायन से : डॉ. रमेश कुंतल मेघ, पृ. 299.
10.द्रष्टव्य : मिथक और साहित्य – डॉ. नगेन्द्र, पृ. 12.
11.सर्गश्चय प्रतिसर्गश्चवंशो मन्वतराणि च

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org